कौटिल्य एकेडमी

MAINS TEST PAPER - 6 / PAGE - 1

तारीख - 15-02-2021

नमूनार्थ प्रश्नोत्तर पुस्तिका
Sample Question Answer Booklet

306666

Paper Code
GS-VI

42/100

रोल नंबर अंतर्राष्ट्रीय अंकों में लिखें - (1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 0)

रोल नंबर शब्दों में लिखें -

नाम - हरिवंश

Paper Code
GS-VI

306666

अभ्यर्थी द्वारा सावधानीपूर्वक भरा जावें।

Roll No.

0	0	0	0	0	0
1	1	1	1	1	1
2	2	2	2	2	2
3	3	3	3	3	3
4	4	4	4	4	4
5	5	5	5	5	5
6	6	6	6	6	6
7	7	7	7	7	7
8	8	8	8	8	8
9	9	9	9	9	9

अभ्यर्थी के अनुक्रमांक एवं पहचान पत्र को प्रवेश पत्र से मिलान पश्चात् ही वीक्षक बॉक्स में हस्ताक्षर करें

वीक्षक द्वारा भरा जावे।

यदि अभ्यर्थी अनुचित साधन का उपयोग करते हुए पाया जाता है तो वीक्षक निम्नांकित गोले को काले/नीले पेन से भरे एवं तत्काल केन्द्राध्यक्ष को सूचित करें।

(केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर एवं सील परीक्षा भवन में)

Scanned with CamScanner

प्रश्न 1. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 1000 शब्दों में निबंध लिखिए। 1x50=50

(1) ज्ञान का व्यवहारिक होना सभ्य समाज का द्योतक है।
(2) भारत में स्वास्थ्य: स्थिति, समस्या तथा सुधार।
(3) भारत और कोविड- 19
(4) अंतर्राज्यीय जल - विवाद।

पू./M = 50

प्राप्तांक

उत्तर :(1)

ज्ञान का व्यवहारिक होना सभ्य समाज का द्योतक

'रामचरित मानस' के उत्तरकांड में एक प्रसंग में - गरुड़ जी ने काकभुसुण्डि जी से पूछा इस संसार में सबसे बड़ा दुःख क्या है, कवन दुःख भारी।

उस सवाल पर काकभुसुण्डि जी ने अपने बुद्धि विवेक और ज्ञान के आधार से उत्तर दिया -

"नहि दरिद्र सम दुःख जग माहीं
संत मिलन सम सुख जग नाहीं"

वास्तव में सांसारिक व्यवहार में दरिद्रता रूपी महादुःख के उपाय स्वरूप 'धन' की माँग करता, क्योंकि धन के अभाव में ही वह दरिद्र है। किंतु काकभुसुण्डि जी ने अपने बुद्धि कौशल का प्रयोग करके संसार की अवधारणा का खंडन किया। सभ्य समाज के निर्माण में 'ज्ञान' की महत्ता को उस प्रसंग में परिभाषित किया गया है। किंतु वे कौन से गुण हैं, या ज्ञान है जिससे सभ्य समाज का निर्माण होता है? कैसे उस ज्ञान की प्राप्ति हो? किस तरह से व्यवहार में उसका प्रभाव हो?

Scanned with CamScanner

1x50=50

प्रश्न 1. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 1000 शब्दों में निबंध लिखिए।

पू./M - 50

प्राप्तांक

( ) Continue (जारी)

क्या हमें पाने के लिए उच्च कोटि की डिग्री - हासिल करनी होगी? या फिर वैश्विक शिक्षण संस्थानों एवं अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्रों में जाना होगा? क्या इसकी प्राप्ति हेतु 'उच्च भौतिक मूल्य' चुकाना होगा? या फिर उच्च मानवीय गुणों एवं नैतिक मूल्यों का विकास करना होगा?

भारतीय समाज विभिन्न जातियों-जनजातियों, धर्मों, पंथों, सम्प्रदायों, वर्गों और क्षेत्रों में बंटा हुआ है। वन्य प्रदेशों में जनजातीय एवं आदिवासी समाज, मैदानी भागों में आर्य समाज ([illegible]) तथा दक्षिणी प्रदेशों में द्रविड़ समाज आदि। सब के सब अपनी अपनी मान्यताओं, क्रियाओं के साथ विद्यमान हैं। सभी समुदायों के अपने अपने 'सभ्य' और 'असभ्यता' के मापदंड व्याप्त हैं। वास्तव में सभ्यता का संदर्भ इस रूप में है - जो समाज में मानवीय गुणों यथा दया, करुणा, प्रेम, भाईचारा, सहयोग, समन्वय तथा सहिष्णुता आदि गुणों का विकास करे। व्यक्ति, परिवार, समाज एवं राष्ट्र को सकारात्मक एवं रचनात्मक तरीके से निर्माण में सहयोगी हो।
तो क्या इन मानवीय गुणों एवं नैतिक मूल्यों के सीखने के लिए किसी विशेष योग्यता या डिग्री की जरूरत है?

प्रश्न 1 निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 1000 शब्दों में निबंध लिखिए।

(.....) Continue (जारी)

सचिन तेंदुलकर को कौन नहीं जानता? नाम लेते ही मन में भारत माता के सच्चे सपूत का, सम्मान और श्रद्धा एक साथ उमड़ पड़ती है। विश्व रिकॉर्ड, विनम्रता, शालीनता की मिसाल। क्रिकेट के मैदानों में कई बार अंपायर के गलत निर्णयों से वे शिकार हुए, किंतु कभी अपनी प्रतिक्रिया नहीं दी। सदैव खेल भावना का सम्मान किया। उनके इन्हीं गुणों ने उन्हें भारत रत्न बनाया।

उनकी शिक्षा तो ज्यादा नहीं है। किसी यूनिवर्सिटी को पढ़ाई नहीं की। फिर भी नाम लेते ही उनके सम्मान में सर झुक जाता है।

इस उदाहरण ने स्पष्ट कर दिया कि मानवीय गुणों एवं नैतिक मूल्यों के विकास के लिए किसी विशेष डिग्री की आवश्यकता नहीं है।

तथा फिर उच्च शिक्षण संस्थानों, डिग्रियों की स्वस्थ समाज निर्माण में कोई भागीदारी नहीं?

संकीर्ण विचार वाले व्यक्ति ऐसा सोच सकते हैं- किंतु व्यापक और दूरदर्शी अवधारणा से यह धारणा गलत है। तकनीकी ज्ञान, कौशल विकास, एवं अनुसंधान एवं जन कल्याण हेतु इन संस्थानों का अभूतपूर्व योगदान है। किंतु केवल डिग्रियां ही स्वस्थ समाज के निर्माण में सहयोगी नहीं।

प्रश्न 1. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 1000 शब्दों में निबंध लिखिए। 1x50=50

(.....) Continue (जारी)

पू./M = 50

प्राप्तांक

उच्च शिक्षा प्राप्त लोग कभी कभी असभ्य समाज को जन्म देते हैं। जैसे भ्रष्टाचार, कन्या भ्रूण हत्या (कन्या) और मानवीय हिंसा आदि।

क्या सभ्य समाज के निर्माण में उच्च शैक्षिक मूल्य दुबारा गढ़ना है? आमतौर पर ऐसा देखा और पाया जाता है कि लोग अपने बच्चों को महंगी से महंगी शिक्षण संस्थानों में दाखिला दिलवाते हैं। नये नये आधुनिक शैक्षिक संस्थानों की डिग्री के लिए लाखों खर्च करते हैं, पर इन सब उपायों के बावजूद असभ्य और अमानवीय हो जाते हैं।

अभी भी निर्भया, इंजीनियर पंकज ... की घटना हमारे मन मस्तिष्क से भूली नहीं है। ऐसा प्रतीत होता है उच्च शिक्षा, से सभ्य समाज का निर्माण मुश्किल जा रहा है। परिस्थिति को सभ्य समाज के निर्माण उच्च कुल या उच्च जाति या वर्ग में जन्म लेना आवश्यक है। कुछ गुरुओं ने निम्न बड़े लोगों से प्रतिपादित किया, जिन्हें वे सभ्य मानते थे; उनकी बातों व्याख्या से एक सभ्य समाज की कल्पना की थी।

क्या सभ्य समाज के निर्माण के लिए कुलीन होना आवश्यक है?

Scanned with CamScanner

प्रश्न 1. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 1000 शब्दों में निबंध लिखिए। 1x50=50

पू./M = 50

प्राप्तांक

(.....) Continue (जारी)

भारतीय समाज के ऐतिहासिक ग्रन्थों में आर्य समाज को सभ्य और कुलीन माना जाता है। वैदिक ग्रन्थों का आचरण, पूजा पाठ कर्मकांड, कथा, उपवास आदि क्रियाओं में अन्य वर्गों और जातियों से स्वयं को श्रेष्ठ और सभ्य स्थापित करते हैं। किंतु समाज में सती प्रथा, जीव बलि, पाखंड, पत्थर पूजा, अस्पृश्यता, ऊँच-नीच आदि सामाजिक बुराइयाँ इस समाज में असभ्यता का ही परिचायक है।

क्या यूरोपीय व अमेरिकी समाज में सभ्य समाज की कल्पना साकार होती है? क्या वे हम भारतीय लोगों से ज्यादा सभ्य हैं? यूरोपीय समाज का इतिहास रक्त रंजित दिखाई देता है। उपनिवेश विस्तार और सांस्कृतिक श्रेष्ठता के लिए हिंसा का सहारा लिया। अतीत में उपनिवेश - ब्रिटिश, डच और पुर्तगीज कुछ प्रमुख औपनिवेशिक देश हैं जहाँ ब्रिटेन के कर्ज़न ने अपने देश के लोगों को भावनात्मक संकट में डाल दिया हो सभ्य समाज का यह प्रतिबिंब असभ्य और अमानवीय है।

नीति आयोग ने भारत को ज्ञान आधारित समाज के निर्माण के महत्त्व को बताया है। सरकार ने भी अपनी घोषणाओं में एक भारत - श्रेष्ठ भारत के निर्माण का शंखनाद किया है। लेकिन कैसे?

1x50=50

प्रश्न 1 निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 1000 शब्दों में निबंध लिखिए।

पू./M = 50

प्राप्तांक

( ) Continue (जारी)

क्या आधुनिक एवं वैज्ञानिक शिक्षा प्रणाली से; सभ्य समाज का निर्माण हो सकता है? क्या सूट-बूट-टाई सभ्य समाज का प्रतीक हो सकता है? क्या अंग्रेजी भाषा विचार आधुनिक बड़े-बड़े स्कूल (?) सभ्य समाज के परिचायक हैं? नैतिक मूल्य आदि और नैतिकता के मापदण्डों में प्रयुक्त होना आवश्यक है। जबकि इनकी भौतिक उपलब्धि तथा जीवन की गुणवत्ता में भी वृद्धि हुई है एक-जनरेशन से ले ज्यादा सभ्य लगते हैं। सूट बूट और टाई के पहनावे से वे अपनी आधुनिक एवं सामाजिक एक छवि को प्रदर्शित करते नजर आते हैं किन्तु सूट बूट और टाई के साथ जब एक व्यक्ति लड़कियों का मजाक लेकर समझें अपनी विवेक शक्ति-स्त्रियों को परिचित करता है तो निश्चित ही उसे सभ्य समाज कभी सभ्य नहीं कहा जा सकता है।

जब गांधी जी को एक बार एक अंग्रेज ने पूछा - क्या राजा कृष्ण से कहा, तुम भारतीय कितने अजीब हो, कोई धोती, कोई लुंगी; कोई गमछा पजामा; कोई पगड़ी, कोई कुर्ता में पाये जाते हो। हमें देखो सब एक से, एक कद और पहनावे भी एक सा ही है। तब गांधी जी ने जवाब दिया कि तुम मूर्ख हो, सारे गधे एक जैसे होते हैं। हम भारतीय तो शेर हैं। सहज जवाब मिला

प्रश्न 1. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 1000 शब्दों में निबंध लिखिए। 1x50=50

पू./M = 50

प्राप्तांक

(.....) Continue (जारी)

क्या आधुनिक एवं वैज्ञानिक शिक्षा अपनाने से सभ्य समाज का निर्माण हो सकता है? क्या सूट-बूट-टाई सभ्य समाज की प्रतीक हो सकते हैं? क्या ऊँचे कद एवं निखरे आकर्षक चेहरे (Pink) सभ्य समाज के परिचायक हैं? वैज्ञानिक प्रगति और तार्किकता के मामले में यूरोपीय देश अग्रणी हैं। इससे उनकी भौतिक उपलब्धि तथा जीवन की गुणवत्ता में भी वृद्धि हुई है। एक नजरिये से वे ज्यादा सभ्य लगते हैं। सूट बूट और टाई के पहनावे से वे अपनी संस्कृति एवं सामाजिक एकरूपता को प्रदर्शित करते नजर आते हैं किंतु सूट बूट और टाई के साथ जब एक व्यक्ति तकनीक का सहारा लेकर समाज अपनी हिंसक गतिविधियों को परिचालित करता है तो निश्चित ही उसे सभ्य समाज की देन नहीं कहा जा सकता है।

इस प्रसंग में एक बार एक अंग्रेज ने डॉ. राधाकृष्णन से कहा, तुम भारतीय कितने अजीब हो, कोई छोटा, कोई बड़ा; कोई गोरा, काला; कोई पगड़ी, कोई कुर्ते में पाये जाते हो। हमें देखो सब एक रंग, एक कद और पहनावे भी एक रूप से है। तब डॉ. राधाकृष्णन ने जवाब दिया कि तुम मूर्ख हो, सारे गधे एक जैसे होते हैं। हम भारतीय रंग बिरंगे घोड़े हैं। सहज जवाब भिन्न

(....) Continue (जारी)

कौन सोचता है स्वस्थ समाज का निर्माण ? क्या है स्वस्थ समाज का स्वरूप ? भारत गाँधी का देश है। भारत की आत्मा ग्रामीण जीवन शैली में सुन्दर होता है। महात्मा गाँधी ने स्वस्थ समाज के लिए 'राम राज्य' की स्थापना की बात की है। गाँधी जी के 'राम राज्य' का स्वरूप निम्न पंक्तियों से उजागर होता है -

" राम राज्य बैठे त्रैलोका
हर्षित भए, मिट गये सब शोका "

निःसंदेह एक स्वस्थ समाज का यही स्वरूप हो सकता है। जहाँ सभी व्यक्तियों, जीवों, प्रकृति - सब में हर्ष, उल्लास और आनंद की प्राप्ति हो, किसी को कोई भय, शोक या संताप न हो।

उस कल्पना के स्वरूप को साकार करने में 'किस ज्ञान' का होना आवश्यक है? क्या मात्र कठोर कानूनों से उसकी प्राप्ति हो सकती है? भारतीय संविधान एक स्वस्थ, सक्षम और समावेशी राष्ट्र की कल्पना करता है। संविधान की शक्तियों का प्रयोग कर समाज और देश में व्याप्त कुरीतियों को समाप्त करने के लिए कठोर कानून बनाये। किन्तु भ्रष्टाचार, अनाचार, दहेज प्रथा, कन्या भ्रूण हत्या ज्यों की त्यों विद्यमान है। ये सरकार और संगठनों की विफलता का संकेत है। सच्चा ज्ञान ही समाधान।

प्रश्न 1 निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 1000 शब्दों में निबंध लिखिए। 1x50=50

पू./M = 50

प्राप्तांक

(....) Continue (जारी)

सच्चा ज्ञान के सन्दर्भ में गोरखनाथ जी ने बताया।
"और ज्ञान सब ज्ञानड़ी, कबीर ज्ञान सो ज्ञान।
जैसे गोला तोप का, करता चले मैदान।।"

कबीर जी के ज्ञान से स्वस्थ समाज और सशक्त राष्ट्र का निर्माण संभव है। क्योंकि अपने समय की व्याप्त सामाजिक कुरीतियों, कट्टरता और रूढ़ियों पर करारा प्रहार करते, तथा समाज में प्रेम, दया, मानवीय करुणा के संदेश का प्रचार-प्रसार करके समरसता एवं निष्ठता से काम किया। वे समाज में व्याप्त वैमनस्यता के लिए कहा करते थे -
'करनी तज, कथनी कथे, ये अज्ञानी दिन रात
कूकर कब भोंकत, फिरे, ये सुनी सुनायी बात।।'

वे करनी तथा कथनी में समरूपता लाने की वकालत करते नजर आते हैं। जो समकालीन राजाओं एवं महाराजाओं को भी सचेत करते दिखाई देते हैं। जिन गुणों से सच्चे ज्ञान का निर्माण होता है उनमें ज्ञान, भक्ति, सेवा, दया, धर्म आदि गुणों का निर्वहन किया जाना आवश्यक है। इससे अपनी धारणीयता को बनाए रखना होगा, क्योंकि धर्म का अर्थ 'धारण' करना ही है। उन गुणों का व्यवहार में कैसे प्रकार किया जा सकता है? क्या वर्तमान में ही जीवन जिए?

Scanned with CamScanner

प्रश्न 1 निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 1000 शब्दों में निबंध लिखिए।

( ) Continue (जारी)

1x50=50

पू./M = 50

प्राप्तांक

एक नन्हा पौधा अपने विकास क्रम में कई परिवर्तनों से गुजरता और कई समस्याओं एवं चुनौतियों का सामना कर विशाल वृक्ष में परिणत होता है, और कई जीव जन्तुओं को आश्रय व भोजन प्रदान करता है।

ठीक उसी प्रकार से एक स्वस्थ व्यक्ति ही स्वस्थ समाज एवं राष्ट्र का निर्माण कर सकता है। राज्य की धुरी घर है, और घर की धुरी महिला। एक शिक्षित, सुसंस्कृत स्त्री ही ज्ञानवान एवं गुणवान बच्चे का निर्माण कर सकती है। घर का वातावरण, परिवार का वातावरण एवं समाज का वातावरण स्वस्थ हो, उसके विचार, व्यवहार में एकरूपता हो। बचपन से ही सत्कर्मों से घर परिवार तथा समाज में प्रचार हो, सभी के बीच समन्वय, सहयोग और सहभागिता हो। उस परिवेश में किसी भी प्रकार की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक गन्दगी का अभाव हो।

सद वचनों एवं सद कर्मों से अभिसिंचित ऐसा बालक निश्चित ही मर्यादित एवं सदाचारी और सच्चरित्र व्यक्ति बनेगा तथा स्वस्थ समाज और राष्ट्र के निर्माण में सहयोगी होगा। उदाहरण स्वरूप माता सुनीति ने 'ध्रुव' को पाँच वर्ष की आयु में ही आध्यात्मिक ज्ञान, धर्म की शिक्षा दी। यहाँ प्रह्लाद

प्रश्न 1. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 1000 शब्दों में निबंध लिखिए। 1x50=50

पू./M = 50

प्राप्तांक 2

(.....) Continue (जारी)

इक्कीस वर्ष की आयु में ही संन्यास पथ पर लग गये थे और हमारे समाज की पुरातन रूढ़िवादी व कुत्सित धारणाएँ बदलनी होंगी। जिन गुणों को विचार एवं व्यवहारों को हम विरासत कहते अभी हमारे आचरण व्यवहार में उतार कर पायें आपको।

क्या सरकारें और सामाजिक व अन्य संगठन इस विषय में कुछ प्रयास कर सकते हैं? क्या सच्चे अर्थ में भारत 'विश्व गुरु' बन सकता है? हमारी धार्मिक संस्कृति की जड़ें बहुत गहरी और मजबूत हैं। अल्लामा इकबाल भी कहते हैं, यूनान, मिस्र, रोमा, मिट गए सब जहाँ से, कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी..।

शासन व्यवस्था राष्ट्र की नीतियों और नियम में अहम भूमिका निभाते हैं। अतः उत्तम चरित्र दल का शासन तंत्र संचालित होता है। उनकी नीतियाँ, योजनाएँ, और कार्यक्रमों में संत ज्ञान का प्रचार हो, समाज में अश्लीलता न परोसा जाए, कला के नाम पर अश्लील फूहड़ता पर रोक हो। बच्चों एवं महिलाओं की सुरक्षा की विवशता का भाव न पाया जाए। संतों, महापुरुषों, की वाणी एवं विचारों का प्रचार हो, तब स्वच्छ आसपास पर्यावरण को निर्मल नाना स्वागत और उजागर, निर्विकार शुद्ध प्रार्थना करें जानो, स्वच्छ स्थानीय संत सुकृत द्वारा प्रार्थना व

...की विकास यात्रा।
(2) अनुशासन सभ्य समाज की धुरी।
(3) भारत और कल्याणकारी राज्य।

उत्तर (१) :- रामू धनियारा अपनी भाय की गठरी लिये सुहाना दरिया के तट पर खड़ा है। तभी पहाड़ों से बारिश होने से दरिया में जलस्तर बढ़ने से दरिया आज उफान पर है। ऐसी स्थिति में वह दरिया के पार जाने में असमर्थ लग रहा है। अपने मन में कुछ विचार कर रहा था तभी उसने देखा कि सेना की एक टुकड़ी, उसकी ओर आ रही थी। वह डर कर एक पेड़ की ओट में खड़ा हो जाता है। वह देखता है कि एक आदमी के आदेश से सब कार्य कर रहे हैं। शायद वह टुकड़ी का नायक था। रामू ने जब ध्यान से सुनकर उस नायक से सहायता की माँग की। तब नायक ने उससे जानना चाहा कि तुमने इतनी भीड़ में मुझसे ही क्यों सहायता माँगी? इस सवाल पर किसान का जो जवाब था उसे सुनकर नायक हतप्रभ हो गया। उसने बताया जिस गुण की मुझे तलाश थी वह इन सब में नहीं था। जिस गुण की मुझे तलाश थी वह केवल आप में था। जिसके कारण मैं अपने उद्देश्य की पूर्ति समझता हूँ।

मानव जीवन की सबसे बड़ी अमूल्य धरोहर अनुशासन।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 2. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 250 शब्दों में निबंध लिखिए। 1x25=25

पू./M = 25

प्राप्तांक

(.....) Continue (जारी)

अनुशासन की शिक्षा का प्रारंभ घर से होता है। जहाँ माता जो करता, सुनता है वैसा ही अनुकरण करता है। शिक्षा से संस्कारों के माध्यम से व्यक्तित्व और कर्तव्य का पाठ पढ़ाने से बेहतर चरित्र और व्यक्ति का निर्माण होता है। इस गुण से समाज सभ्यता के शिखर तक पहुँचता है। शायद का मान-सम्मान बढ़ता है।

सभ्य समाजों की स्थापना करने तथा व्यक्ति में उच्च आदर्शों एवं गुणों का विकास होता है। पवित्र मन, बुद्धि एवं ज्ञान के प्रसार से सभ्य समाज का निर्माण होता है और अनुशासन का महत्व योगदान रहता है।

अनुशासन वह निर्मल धारा है जिसकी प्रवाह के अनुकरण से समाज समुन्दर की तरह विशाल, विनम्र एवं शांति को प्राप्त होती है। जहाँ लोकतंत्रात्मकता होकर मानवीयता एवं सहनशीलता का विकास होता है। इससे समाज को परिवर्तित करने एवं नई दिशा देने की अपार क्षमता होती है। जीवन अर्थपूर्ण और उद्देश्य पूर्ण बनाती है।

नायकों के अन्दर राष्ट्र धारणाएँ ने इसी गुण को लेकर अपने उद्देश्य की पूर्ति की राह देखी।

...विता कुरुक्षेत्र का मत, सभ्यता मूल्यों से जन्मती है, स्वतंत्रता के साथ जुड़ी होती है, अव्यवस्था से निपट होती है।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 2. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 250 शब्दों में निबंध लिखिए। 1x25=25

(...) Continue (जारी)

पू./M = 25

प्राप्तांक 11

मानव जीवन और सभ्य समाज को आधार मिलता है - अनुशासन। यह न केवल एक उत्तम जीवन-शैली है, बल्कि सभ्य समाज के सुसंचालन का एक उपकरण भी है।

अनुशासन का अर्थ स्वयं को एक निश्चित नियमों के अनुरूप क्रियान्वित करना है। जीवन में प्रत्येक क्रिया के अनुपालन में अपनी आजादी और सीमाओं को मर्यादित रखकर पालन करना। अनुशासन व्यक्तिगत एवं व्यावहारिक समाज की जननी है।

महत्व - सभ्य समाज के केन्द्र में अनुशासन मुख्य-गुरुत्व कर्षण है। समस्त प्रकृति एक अनुशासन में बंधकर चलती है। इसलिए इसके किसी भी क्रिया में बाधा नहीं आती। दिन-रात नियमित रूप से चलते रहते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि अनुशासन के माध्यम से सभ्य समाज और सशक्त राष्ट्र का निर्माण संभव हो सकता है। 'एक भारत - श्रेष्ठ भारत' का सपना साकार हो सकता है। गांधी जी का अनुशासन सर्वश्रेष्ठ माना है। इससे विचलन पर समाज विकृति और पिछड़ा है।

हानियाँ : अनुशासन के अभाव में समाज में अनाचार, दुराचार, चरित्र हीनता तथा निरंकुशता बढ़ती है। समाज में आसुरी शक्तियों का प्रभाव बढ़ता है। समाज की कालिमा तथा अनुशासनहीनता का ही परिणाम है।

Scanned with CamScanner

1x25=25

पू./M = 25

प्राप्तांक

प्रश्न 3. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 250 शब्दों में निबंध लिखिए।

(1) ई - गवर्नेंस।

(2) खाद्य प्रसंस्करण उद्योग की संभावनाएँ।

(3) क्या लोकपाल भ्रष्टाचार को खत्म में सफल है ?

उत्तर (02) : खाद्य प्रसंस्करण उद्योग की संभावनाएं

"रोटी के हैं रूप हजार
रोटी बिना न जीवे जग
रोटी भोगी और त्यागी, रोटी बिना न चले जगत

रोटी कृष्ण दत्त ने पायी
खाते सहते आदमी की क्षुधा मिटाई ॥"

यंत्र गर्जित काव्य जो (कुडाली-संस्थापना) द्वारा रचित इन चंद पंक्तियों में रोटी की गरिमा, महिमा एवं सामर्थ्य का उद्बोध प्रकट होता है।

रोटी का संबंध जीवन एवं जीविकोपार्जन दोनों से है। जीवन के संदर्भ में भौतिक शरीर को उदरपूर्ति एवं पोषण; तथा जीविकोपार्जन के संदर्भ जीवन की अन्य भौतिक आवश्यकताओं यथा (रोटी, कपड़ा, मकान आदि) से है। स्थिति बदलते वैश्विक परिदृश्य में जीवन आहार जगत

प्रश्न 3. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 250 शब्दों में निबंध लिखिए। 1x25=25

पू./M = 25

प्राप्तांक

(Q2.) Continue (जारी)

के व्यवसाय एवं व्यापार में अनेक चुनौतियाँ उभर कर सामने आई हैं। जैसे आपूर्ति, कुपोषण, भुखमरी, बेरोजगारी, प्रवासन, आर्थिक असमानताएं आदि अनेक समस्याएं दृष्टिगोचर हो रही हैं। बढ़ती कृषक आत्महत्याएँ, गाँव-शहर के बीच खाई, तथा अनेक सामाजिक आर्थिक एवं पर्यावरणीय को कम करने एवं लोगों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार तथा खाद्य के निर्यात में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग में अनेक संभावनाएं उभर कर सामने आई हैं।

भारत में इस उद्योग के लिए अनुकूल भौगोलिक दशाएं, कृषि जलवायु क्षेत्र, मृदा की विविधता एवं प्रचुर श्रम संसाधनों के साथ विशाल जनसंख्या का पाया जाना है। किंतु खाद्य प्रसंस्करण क्या है, कौन-कौन प्रक्रियाओं का समावेश होता है? खाद्य प्रसंस्करण कृषि उपज व अन्य वनस्पति के मूल उत्पाद में उसके स्वरूप, गुण एवं दीर्घकाल तक उपभोग हेतु नवीनता एवं कौशल से परिवर्तन करना है। जैसे अनाज के दाने आचार, चावल, जूस, अचार (फल आम के रस को धूप में सुखाना) के रूप में, डेयरी उत्पाद जैसे दूध से पनीर, घी, दही, पनीर आदि का निर्माण करना तथा उसे पैकेट (packaging) में संचय कर शहर एवं बाजारों तक पहुँचाया जाता।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 3. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 250 शब्दों में निबंध लिखिए।

(02) Continue (जारी)

संभावनाएं: खादी आधुनिक शैलियों में इस भांति
को अपार संभावना है। स्वाभाविक उत्पादों में भारत भाग
नियंत्रणों को प्राप्त कर लिया है, ग्रामीण स्तर पर रोजगार के
बरसाती के दिनों में सम्पर्क है स्वयं प्रमाणकता।
वस्त्र ही जागरूक करना एवं खादी कला में लोगों की
जीवन शैली और कार्य शैली में स्थापित बनाता आ रहे
हैं। इससे में इन वस्तुओं में [illegible] एवं स्वयं उपाये।
कार्बन एवं स्वच्छ मानवों की मांग रही है।
साथ ही विशाल जनसंख्या को रोजगार भी मिलेंगे इन
है। अर्थ में प्रासंगिक स्वच्छ उत्पादों की उपयोगिता की
है यह ग्रामीण आजीविका में भी सहयोगी सिद्ध हो
स्वास्थ्य का आयोजन ग्रामीण भागों में प्रयत्नशील उत्पाद
के निर्माण से ग्रामीण आबादी को रोजगार एवं आय
की वृद्धि करने में सहायक है।
स्वयं सहायता समूहों, लघु उद्योगों के निर्माण से लोगों का
शहरों की ओर पलायन कम होगा तथा शहरी संसाधनों
पर दबाव भी नहीं रहेगा। साथ ही शहरों एवं गांव
के मध्य की विषमता घटेगी। आय असमानता को
कम करने में सहायता मिलेगी। [illegible] प्रयत्नशीलता से जीवन
में विविधता आयेगी। रुचियों के अनुसार तथा बाजार
की आवश्यकताओं के अनुसार उत्पादन होगा।

ऐतिहासिक तथा शांत स्वभाव (गांधी) अब प्रमाणित मानक की
आवश्यकता में लाया गया कि भारत में स्वदेशी प्रयत्नशील [illegible]

रफ कार्य हेतु स्थान।
SPACE FOR ROUGH WORK

11

~~क्षेत्र में किसानों की आय में वृद्धि सुधार के साथ-साथ रोजगार को उत्पन्न प्रयोगकार है। रिपोर्ट में यह भी अनुमानित है कि वर्ष 2024 तक भारत में खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र में 33 अरब डॉलर का निवेश करने एवं 90-लाख नये रोजगार सृजन करने की क्षमता है। खाद्य प्रसंस्करण उद्योग कृषि और बाजार के मध्य-सेतु का कार्य करता है। बाजार लिंकेज कार्यक्रम को अनुकरण [illegible] निर्णय को बढ़ावा देने में सहायक है। सरकार द्वारा इस उद्योग के विकास के लिए प्रयास लगातार जारी है। सरकार ने 42 मेगा फूड पार्कों की स्थापना की घोषणा के साथ आत्मनिर्भर भारत, फार्म-बैंक पर्ड लिंकेज सुविधा के साथ प्रधानमंत्री किसान संपदा योजना का शुभारंभ किया गया। साथ ही एक जिला-एक उत्पाद को बढ़ावा देने का प्रयास किया गया है। जैसे [illegible] की सुन्दरजा आम, नागपुर का संतरा, [illegible] का नारियल, रागी आदि। साथ ही [illegible] उत्पादों की माँग में निरंतर वृद्धि देखी जा रही है।~~

~~भारत में सामाजिक तथा आर्थिक बदलावों से संयुक्त परिवार के विघटन एवं एकल परिवार की वृद्धि के साथ [illegible] की माँग बढ़ी है। साथ ही ऑर्गेनिक पूर्ण खाद्य पदार्थों की [illegible] प्रकृति में बदलाव जिसमें स्वास्थ्य जीवन ने उपभोक्ताओं की माँग में तेजी से वृद्धि हुई है। प्रसंस्कृत उत्पादों की [illegible] 2022 तक किसानों की आय में वृद्धि नीति आयोग ने भी [illegible] के विकास में महत्वपूर्ण माना है। तथा ग्रामीण [illegible] आवश्यकता~~

Phone No. 0731-4226615, 4266821 Mob. 98939 29541, 94250 68121

www.kautilyaacademy.com

Scanned with CamScanner

www.kautilyaacademy.com

हम विद्यार्थियों को बेहतर शिक्षा देने के लिए समर्पित हैं. सभी सुरक्षा मानकों का विशेष ध्यान रखते हुए सुरक्षित एवं सेनिटाइज्ड वातावरण में कक्षाएं प्रारम्भ हो चुकी हैं एवं एडमिशन की प्रक्रिया जारी है. आप भी अपने सुरक्षित भविष्य के लिए कौटिल्य एकेडमी आएं और सफलता पाएं.

हम हैं तैयार

आपको तैयार करने के लिए !

REGULAR OFFLINE CLASSES STARTED

KAUTILYA MENTORS

Mr. Shridhant Joshi, Managing Director | Mr. Ashendra Mishra, Director | Mr. Manmohan Joshi, C.E.O.

Mr. Sunil Tiwari, National Co-ordinator | Mr. Devendra Mishra, CRM | Mr. Rishi Bhosle, H.O.D. English Medium

IAS/IPS की तैयारी
10वीं / 12वीं के तुरंत बाद शुरू करें

कौटिल्य एकेडमी **संरचना** — 10वीं के बाद 5 वर्ष का कोर्स

कौटिल्य एकेडमी **संकल्प** — 12वीं के बाद 3 वर्ष का कोर्स

OUR YOUNG ACHIEVERS

IRS, UPSC - 2018, AMBUL SAMAIYA | Deputy Collector, MPPSC - 2018, KIRAN ANJANA | Deputy Collector, MPPSC - 2018, TARUN JAIN

DSP in 20 Yrs, DC in 21 Yrs, IRS, UPSC in 22Yrs, AKSHAY SINGH | Deputy Collector, PRAMOD GURJAR | UPSC Rank 521, VAYAVYA CHOUBEY

FEATURES OF SANRACHNA PROGRAM

- Daily 3 Hours Classes
- News Paper Reading Session
- NCERT Oriented Classroom Teaching in order to Cover 11th & 12th School Syllabus
- School & Hostel Facility Available
- Vocabulary & Comm. Skills Development Sessions
- Visual Representation of Core General Studies topics such as History, Polity, Geography, Economy, Science & Technology, Environment.
- Special Classes of PCB, PCM, Commerce & Humanity to cover School Syllabus

नई बैचेस में प्रवेश प्रारंभ

OFFLINE

COURSES
- IAS • IPS
- MPPSC
- CJ-II
- NDA-CDS
- MPSI
- CONSTABLE
- SSC
- BANK

IAS • IPS • MPPSC • CJ-II • ADPO • NDA-CDS • MPSI • SSC • BANK • RAILWAY • ENGINEERING • RANGER

कौटिल्य एकेडमी

मुख्यालय : BHANWARKUA SQUARE INDORE. Call : 94250 68121, 98939 29541

PRESS COMPLEX — Swadesh Bhawan, Ground Floor, Press Complex, A.B. Road, Indore

RAJWADA — Shivaji Bhawan, Jawahar Marg, Near Gurudwara, Indore. M. 91110 21931, 91110 21921

FOOTI KOTHI — 102, 1st Floor, Surya Bhawan, Above Bank of Baroda, Indore

GEETA BHAWAN — Kanchan Bagh, Geeta Bhawan Square, Indore

KALANI NAGAR — Airport Road, Indore

VIJAY NAGAR

OUR PRESENCE : INDORE, JABALPUR, BHOPAL, GWALIOR, SAGAR, CHHATARPUR, REWA, SATNA, CHHINDWARA, BALAGHAT, UJJAIN, GUNA, SHIVPURI, DHAR, JHABUA, BADWANI, TIKAMGARH, KHANDWA, RATLAM, DAMOH, NIWARI, KATNI, RAIPUR, BILASPUR, RAIGARH, BHILAI, JAIPUR, HOSHANGABAD, SHAHDOL, VIDISHA, SEHORE, BETUL, NARSINGHPUR

Scanned with CamScanner